मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी० एस० ई० (रीटायर्ड)

वर्ष 8 | सोमवार 10 जनवरी 1982 | संख्या 9

परम दयाल फ़कीर सत्संग देहली ।

दिनांक : 26-7-1981

परम दयाल फकीर के मानवता मन्दिर में 5-7-81 12-7-81 19-7-81 के आखिरी सत्संग थे। इसके बाद वो 23-7-81 को अमेरिका की यात्रा के लिए दिल्ली पधारे थे। यहां भारत में यह उनका आखिरी सत्संग है।

दुलहिनी अंगिया काहे न धोवाई,
बालपने की मैली अंगिया विषय दाग परिजाई।
विन धोये पिय रीझत नाहीं सेज से देत गिराई।
सुमिरन ध्यान कै साबुन करि ले, सत्तनाम दरियाई।
दुविधा के बंद खोल बहुरिया मन के मैल धोवाई।
चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई।
चालन द्वार-द्वार है ठाढ़े, अब काहे पछिताई।
कहत कबीर सुनो री बहुरिया, चित अंजन दे आई।

राधास्वामी ! आप को सत्संग नहीं कराता। अपनी आत्मा से पूछता हू क्यों भाई ! चौथापन आ

गया। आखिरी अवस्था आ गई। तुमने अंगिया धुलवाई ? अगियां क्या है औरतें जो कपड़ा पहिनती है उसका नाम अंगिया है। हमारी जो आत्मा है हमारा मन और हमारा शरीर, कौन सी चीज़ है जो हमारी इस अंगिया को अर्थात् मन को मैला करती है ? हमारी जाति गरज़, हमारा स्वार्थ, हमारी अपनी इच्छा। जब तक कोई व्यक्ति इस संसार में अपने स्वार्थ के लिए जीता है उसकी तो अंगिया कभी घुल नहीं सकती क्योंकि वो अपने स्वार्थ के लिए हेरा-फेरी, चारसौबीस करेगा, किसी से झूठ बोलेगा, किसी के साथ कुछ कुछ करेगा।

मैं अपनो अत्मा को पूछता हूं क्यों भाई फ़कीर चन्द ! तूने अंगिया धुवाई ? मैंने अंगिया को धोने की प्रयत्न किया है। मगर जहां मैंने ग़लती खाई वो बात मेरे मन से अब तक भी नहीं जाती। मैंने अपने स्वार्थ के लिए मां से, बीबी से और बाप से प्रेम किया। भूखे पेट के लिए रेलवे में नौकरी की। मैं तार के महकमे में रहा, स्टेशन मास्टर रहा। मेरा कोई स्वप्न ऐसा नहीं जिसमें रेलगाड़ी, या

तार या मां- बाप भाई या बीबी यह नहीं आते। लेकिन आप लोग नहीं आते। मुझे स्वप्न में कभी भी मन्दिर नहीं आया। यह भूपसिंह, गोपालदास या आप लोगों में या मिलने वाले मेरे स्वप्न में कभी नहीं आते। वो क्यों आते हैं तथा ये क्यों नहीं आते ? वो इसलिए आते हैं कि मैंने अपने स्वार्थ के लिए दिल लगाकर उनसे प्रेम किया या दिल लगा कर काम किया। वो संस्कार अब तक भी मेरे सिर में से नहीं जाते। यह सत्संग मैं अपने आप को कराता हूं। अपने आप से पूछता हूं क्यों भाई ! लोगों को उपदेश करता है क्या तूने अंगिया धुलाई ? अंगिया है क्या ? हमारी सुरत के साथ हमारा मन तथा साथ ही हमारा शरीर। अभी मैं आप लोगों से इसलिए प्रेम करूं कि आप आयें तथा मुझे पैसे दे तथा मथ्था टेकें, तब मैं तो अपनी अंगिया को मैला करूंगा क्योंकि यह मेरा स्वार्थ होगा। इसका अर्थ यह होगा कि मुझे ज़ाती पैसे, ज़ाती मान और जाती नाम की आवश्यकता व इच्छा है। तो मैंने अंगिया के धुलाने का अर्थ यह समझा है।

आज एक स्त्री आई। कहती थी कि मुझे मुक्ति दिला दो। मुक्ति तुमको कौन दिलायेगा ? तुमने सारा जीवन जहां-२ प्रेम किया हुआ है वो संस्कार तुम्हारे दिमाग में बैठे हुए हैं। जब अन्त समय आयेगा, बेहोशी में जाओगे तो उन सब संस्कारों की फिलम तुम्हारे सामने चलेगो। जब व्यक्ति मरने लगता है या स्वप्न में चला जाता है जो-२ संस्कार उसने किये हुये हैं सब फिलम बन कर उसके सामने आयेंगे। मैं पूछता हूं कि उनको कौन मिटायेगा ? मैं क्या कर सकता हूं ? अंगिया तुमने स्वयं धोनी है। जो व्यक्ति यह चाहते हैं कि हम जन्म-मरण से बच जाये मैं आत्मा से पूछता हूं कि क्या उनके लिए कोई ईलाज़ है ? मैं किताबों को नहीं जानता। मैं वर्तमान समय में वैज्ञानिक युग में पैदा हुआ हूं। सब पश्चिमी देशों के ड़ाक्टरों ने मरने वाले व्यक्ति को Sensative Seale (तराजू) पर रखा और सामने स्क्रीन लगाकर मसाला लगा दिया। जब वो व्यक्ति मरा, उसकी जान निकली तो उसकी आत्मा को उन्होंने स्क्रीन पर जाते हुए देखा। मगर साथ ही उसका भार भी 5 से 25 ग्राम के बीच घटा।

इससे क्या प्रमाणित हुआ ? कि आत्मा अन्तर से निकल गई है वो इतनी भारी है। जो वस्तु भारी है लाख उसने शब्द, अभ्यास, पुण्य दान किया हुआ हो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसको खींचेगा। क्योंकि उसका भार होगा, पृथ्वी उसको खींचेगी तथा वो आवागमन के चक्कर से नहीं बच सकता।

मैंने प्रण किया था कि अपने जीवन में जो कुछ मिलेगा वो मैं बता जाऊंगा। मेरे प्रण करने का क्या कारण था ? मैं सधारण हिन्दू था। ब्राह्मण के घर जन्म लिया। ईश्वर, परमेश्वर या इस दुनियां के पैदा करने वाले को मानने वाला था। मेरा सौभाग्य या दुर्भाग्य समझ लो मुझे नही पता। 24 घन्टे लगातार रोने के बाद एक दृश्य था जो मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गया। उन्होंने यह राधास्वामी मत या सन्तमत मुझको दिया। जब उनकी वाणियां पढ़ी उनमें सब का खण्डन था। उन्होंने इस दुनिया के पैदा करने वाले को निर्दयी कहा तथा कहा कि वेद व्यास नहीं पहुंचा, मुसलमान जेसिस क्राइस्ट नहीं पहुंचा, राम-कृष्ण काल के

अवतार । तो मैं कहता था कि मैं कहां फंस गया ? उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा, बता जाऊंगा । मेरा आप लोगों पर कोई एहसान नहीं है । मैं अपना कर्म भोगता हूं ।

जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए कोई काम करता है चाहे वो सन्त हो, परमसन्त हो, कोई भी हो उसका संस्कार उसके दिमाग पर भ्रूमध्य पर रहता है । जब वो भ्रूमध्य पर या स्वप्न में आयेगा तो जो-जो संस्कार उसके दिमाग पर पड़े हुए होते हैं वो शक्लें बनाकर उसके सामने अवश्य आयेंगे । क्योंकि यह जगह ही ऐसी है । इसको चिदाकाश बोलते हैं । जो कुछ हम देखते, सुनते व पढ़ते हैं या कुछ पिछले जन्म के कर्म हैं उन सब की फिल्मों व नक्शे बने रहते हैं । जब हमारी सुरत यहां जाएगी वो जो फिलमें हमारे दिमाग के अन्दर बनी हुई हैं वो हमारे सामने आएगी । इनको कोई रोक नहीं सकता, न विलकुल नहीं वो औरत मेरे सामने रोती थी कि मेरा आवागमन मिटा दो ! अरे कौन गुरु तुम्हारा

आवागमन मिटाये ? गुरु का काम तुमको राय देना साधन बताना तथा परादर्श देना है। किसी गुरु ने फूंकमार कर तुमको नहीं ले जाना। आजकल के हम गुरुओं ने गृहस्थियों को मूर्ख बनाकर लूटा है, सच्ची बात नहीं बताई। यदि कोई व्यक्ति आवागमन से बचना चाहता है तो उसका एक ही साधन है कि वो अपने जीवन में मरने से पहले किसी भी स्थूल पदार्थ मकान, धन, मां बाप, पत्नी व बच्चों इत्यादि से प्रेम न करे तथा जिस गुरु से नाम लिया हुआ है यदि उस गुरु के शरीर से तुम्हारा प्रेम है तब भी तुम पार नहीं जा सकते। राम या कृष्ण जिसको तुम अयोध्या व गोकुल में पैदा हुआ समझते हो, यदि उसके ध्यान में मरोगे, तब भी तुम्हारा आवागमन नहीं छूटेगा हां ! तुमको योनि अच्छी मिल जाएगी। हर तरह खुशहाल रहोगे। मगर आवागमन से मुक्ति नहीं मिल सकती। यह है भेद जो मैं आपको बताना चहता हूं।

जब इस स्त्री जैसे सांसारिक लोग मेरे पास आते हैं तो मेरी जान कांपती है। आप पूछोगे क्यों

संसार में Law of Radiation काम करता है । प्रत्येक वस्तु व जानवर जैसा वो होता है,उसके अन्तर से वैसी Radiation निकलती रहती है तथा वो दूसरों पर प्रभाव रखती है। तुम सूक्ष्म बात नहीं समझ सकते तो दुनिया की बात तो समझ सकते हो। देखो, किसी को जुकाम है या हैज़ा हुआ है तुम उसके पास बैठोगे तो तुमको जुकाम व हैज़ा हो जायेगा । तुम लोग जो मेरे पास आते हो यदि मेरी Radiation तुमको जाती है तो क्या तुम्हारी Radiation मेरे पास नहीं आती? यदि मैं तुम्हारा खाता हूं या तुम्हारे साथ प्रेम करता हूं तो क्या तुम्हारे ख्यालात मुझको नहीं मारेंगे ? आप सोचिए कि मैं क्या कह रहा हूं । यदि यह ज्ञान मुझे आज से बीस वर्ष पहले होता तो मैं कभी गुरुआई न करता । इस आयु में मैं समझता हूं कि जितने सत्संगी मुझे प्रेम करते हैं वास्तव में वे मेरे शत्रु हैं । बूढ़ा आदमी हूं, नन्दलाल को अपना शत्रु न समझूं तो क्या समझू ? जिसने यह सत्सग रख दिया । प्रात: से सायं तक तुम लोगों का

तांता लगा रहता है। मुझे एक मिनट भी चैन नहीं मिलता। और अब फिर घण्टे के लिए मुझे कुत्ता बनकर भौकना पड़ता है। क्या नन्दलाल मेरा हितैषी है या शत्रु है ? यह अपने स्वार्थ को लेता है और तुम लोग अपने स्वार्थ को लेते हो। बात मैं सच्ची कह रहा हूं इसमें झूठ की कोई बात नहीं है। Law of Radiation विज्ञान ने सिद्ध किया है। हमारे हिन्दू शास्त्र इस बात को जानते थे। इसलिए प्राचीन समय में स्त्रियां सिवाय अपने पति के बिस्तरे के दूसरे किसी के भी विस्तर पर नहीं सोती थीं। क्यों-कि जैसा व्यक्ति है उसके अन्तर से वैसे ख्यालात निकलते रहते हैं तथा वो इसके कपड़ों में जाते हैं। जिस चोज को वो हाथ लगाता है उसमें जाते हैं। हमारे ऋषियों ने यह छूतछात का सिलसिला बनाया था, वास्तव में इस में यह बात काम करती थी कि जो ब्राह्मण लोग साधन करते थे, वो दूसरे व्यक्ति जो साधन नहीं करते थे उनको छूने से व उनके घर का खाना खाने

से परहेज करते थे ताकि उनके ख्यालात उनके दिमाग़ पर प्रभाव न डालें। मेरी बात को सोचो कि मैंने आपको क्या कहा है ? तुम देखते हो जब कहीं डाका या कत्ल होता है तो पुलिस वाले जो डाकू या क़ातिल होता है उसके कपड़े को कुत्ते को सुँघा देते हैं, वो कुत्ता उधर जाता है जिस तरफ से वो डाकू या चोर गया हुआ है क्योंकि वहां चोर या डाकू अपना प्रभाव छोडते जाते हैं। जो कुछ उसके अन्तर होता है वो बाहर निकलता रहता है। कुत्ता उसको सूंघ-सूंघ कर जहां वो डाकू गया होता है जाता है व उसको पकड़ लेता है। इससे प्रभाव का मसला बिलकुल साफ़ हो जाता है।

तो तुम्हारी Radiation जो मुझ पर आती है मैंने इसका इलाज क्या सोचा ? मैंने 8-10 बर्ष से यह सोचा कि मैं अब किसी से भी प्यार नहीं करता, न पीरेमुर्गाँ से, न नन्दलाल से न किसी से मैं प्रेम से तो तुमको तभी याद करूंगा जब मुझे कोई स्वार्थ होगा। जब मुझे यह आशा होगी कि वो मेरा यह मतलब पूरा कर दे। इसलिए मैंने यह सोचा कि फ़कीर चन्द जाती गरज न रख। आप लोग आते

हैं मेरा जितना प्यार होता है इसके अनुसार आप को उत्तर देता हूं क्योंकि आप के साथ निष्काम नि:स्वार्थ प्रेम है। अत: आप के ख्यालात का प्रभाव मुझ पर कम होना चाहिए। मगर किसी समय हो जाता है। मेरा अन्तर और बाहर अब एक हुआ-२है। मैं कोई बात पर्दे में छुपा कर नही रखता तथा न ही कोई हेरा-फेरी की बात करता हूं। चार दिन का जीवन है। मैं इस अंगिया को धुलाना चाहता हूं। यह कब धुलेगी ? जब मैं हेर-फेर करना छोड दूंगा, आप से हेरा-फेरी करके बात करनी छोड दूंगा तभी तो मेरी अंगिया धुलेगी। यदि मैं हेरा-फेरी करूं कि ये आयेंगे, मुझे पैसे दे जायेंगे, मुझे मत्था टेकेंगे या मेरा नाम रौशन कर जायेंगे, यदि इस विचार से मैं आपसे प्रेम करता हूं तो मैं आपकी Radiation को लूंगा, बच नहीं सकता। यही कारण है कि बड़े-बड़े महात्मा जो पहले बड़े अच्छे थे वे सत्संगियों की संगत में आकर ऐसे गिरे जिसका कोई हिसाब नहीं। यह रजनीश ! उसकी किताबें मैंने पढ़ीं ! बहुत अच्छी थीं मगर फिर, तभी लोगों के प्रभाव से देखलो कि फिर क्या हुआ ?

तो अंगिया क्या है ? अंगिया तुम्हारा मन है। इस मन को साफ करना है तथा यह मन तब तक साफ नहीं हो सकता जब तक कि तुम निष्काम नहीं बनोगे। जब तक तुम्हारे में कोई सांसारिक चाह है या स्वार्थ है या अपने मान, धन की गरज है तब तक तुम्हारी मन रूपी अंगिया कभी धुल नहीं सकती। क्योंकि यही चीजें हैं जो मैल हैं।

दुलहिनो अंगिया काहे न धोवाई ।
बालपने की मैली अंगिया, बिषय दाग परि जाई।

मैंने आपको कहा मेरे मन में रेलगाड़ियों, तार, मां, बाप, बीबी, भाई या जिनके साथ बालपने से मेरा प्रेम था ताये चाचे के लड़के, वे दाग अब भी मेरे दिमाग पर पड़े हुए हैं। जाग्रत में तो मैं याद नहीं करता लेकिन स्वप्न में तो आ जाते हैं। अब मैं लाख प्रयत्न करता हूं कि वो स्वप्न न देखूं लेकिन मेरे बस की बात नहीं। अतः मैं क्या करूं क्योंकि अंगिया

मेरी मैली हुई है। इस मैली का इलाज क्या है ? मैं अपने आप को सत्संग कराता हूं, तुमको नहीं कराता। मैं अपने आप को पूछता हूं कि फ़कीर चन्द ! यदि तू बचना चाहता है तो कैसे बचेगा। केवल एक विचार से कि मैं अपना मोह किसी के साथ न रखूं। यदि महर्षि शिवब्रतलालजी के साथ भी मेरा मोह है या राधास्वामी धाम के साथ मेरा मोह है या किसी का फ़कीर चन्द या किसी और गुरु के साथ मोह है तो उसको भी आना पड़ेगा क्योंकि उसके मन में किसी स्थूल पदार्थ की वासना है। तो जब उसकी जान निकलेगी वो भारी होगी और भारी होने के कारण इसे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति खींचेगी। यहां किसी धर्म का प्रश्न नहीं है। न हिन्दूपने का प्रश्न है न सिक्खपने का बल्कि स्वाभाविक ही मानवता का प्रश्न है। जैसी किसी की इच्छा हो करे या न करे।

विन धोय पोय रोझत नाहीं सेज से देत गिराई।

अब तुम अभ्यास करने लगे हो तुम्हारा मन कभी किधर जाता है कभी किधर जाता है कि नहीं

जाता ? जिधर जाता है उन चीजों के साथ तुम्हारे मन का सम्बन्ध है, उनके संस्कार तुम्हारे मन पर पड़े हुए हैं तो फिर तुम लाख प्रयत्न करो कि तुम्हारी सुरत ऊपर चढ़ जाये, कैसे चढ़ेगी ? कई मेरे पास आते हैं कि मेरी सुरत चढ़ा दो। बाबा क्या करेगा ? कोई कुछ नहीं कर सकता । यह गरीब दास है, सत्संग कराता है। इसको मैं ले जाता हूं। गरीब दास ! यदि संत्सगियों के चक्कर में फंस गया तो तेरा भी जन्म-मरण का चक्कर समाप्त नहीं होगा यह बता देता हूं। पीरेमुर्गा भी सुनता है। मुझे अपना पता नहीं कि मेरे साथ क्या होगा ? 'नथ खसम के हथ'।

सुमिरन ध्यान कै साबुन कर ले, सत्त नाम दरियाई।

इस का भेद क्या है ? कि मन को जो तुम्हारा बेकाबू होकर उन झगड़ों की ओर जाता रहता है जब तुम अभ्यास करने बैठते हो तो जिसका सुमिरन बन जाता है उसका मन पर काबू हो जाता है। जब सुमिरन करते हो तो जो दूसरा विचार आता है

तुम उसको आने नहीं देते । क्योंकि सुमिरन करने वाले को आदत पड़ जाती हैं कि जो ख्याल बाहर से आते हैं उनको वो लेता नहीं । तो सुमिरन का क्या लाभ है ? कि जो संकल्प तुम्हारे मन के अन्दर उठते हैं वो सुमिरन करने के कारण तुम में यह शक्ति आ जायेगी कि तुम्हारे अन्दर प्रेम का, दुनिया के मोह का जो भी विचार आयेगा उसको तुम रोक सकोगे । सुमिरन और ध्यान के अर्थ यह हैं । दूसरे सुमिरन, ध्यान से यह लाभ है कि तुम्हारी इच्छाशक्ति प्रबल हो जायेगी । जो सुमिरन और ध्यान करता है, उसको क्या मिलता है ? उसका मन बलवान् हो जाता है । जो कुछ वो चाहता है या सोचता है, उसके अपने ही मन की इच्छाशक्ति से वो उसको मिल जाता है । लोग जो हैं, मुझे तो पता नहीं होता वो मेरा ध्यान करते हैं उनकी कोई बात हो वो पूरी हो जाती है । तुम समझते हो कि मैं उनके अन्दर गया तथा मैंने यह काम किया है, यह नहीं है । उनके अपने सुमिरन और ध्यान करने से जो उनकी इच्छाशक्ति

प्रबल हो गई तो उस इच्छाशक्ति ने उनका काम किया न कि फ़कीर चन्द ने किया। पीरेमुगाँ! मैं स्वयं चक्कर में हूं। सन्तोष नहीं आया। आज डेढ़ महीना हुआ एक व्यक्ति अमरनाथ मेरे पास कानपुर से आया। वो कहता है, बाबा जी! तीन वर्ष हुए वो देवी-देवता की भक्ति करता था तथा उनसे मिलने की चाह भी थी कि मुझे रास्ता बताओ। वो कहता है कि प्रकाश में मेरे अन्दर एक रूप प्रकट हुआ। आपने कहा तू मेरे पास आ जा। अब उसको पता नहीं था कि वो कौन है। वर्ष भर वो इस चिन्ता में रहा। कोई साधु मिला उसने कहा कि देश सेबक अखबार का एडीटर पण्डित खुश दिल है, उसके पास जाओ। शायद वो तुमको कुछ बता सके। वो उसके पास गया। उसने कहा जो रूप देखा है उसकी शक्ल बना सकता है? उसने कहा कि इस शक्ल के दो व्यक्तियों को मैं जानता हूं। एक पीरेमुगाँ तथा एक फ़कीर चन्द! उसने मुझे कहा कि मैं पीरेमुगाँ के पास गया वहां मुझे सन्तुष्टि नहीं हुई। फिर वो मेरे पास आया। डेढ़ महीने यहां रहा।

अब मैं सोचता हूं कि मैं तो गया नहीं। फिर किसने मेरी शक्ल बनाकर उसे कहा ? यह एक प्रश्न है जो मैं स्वयं हल करना चाहता हूं। बात यह है कि प्रत्येक जीव के मन के जो विचार होते हैं या जो हम बोलते हैं वो विचार इस वातावरण में रहते हैं। इसका प्रमाण विज्ञान ने दिया कि जर्मनी के सैनिट हाल में वर्षों पहले जो वजीरों ने भाषण दिये थे उनको उन्होंने रिकार्ड किया। इस से प्रमाणित हुआ कि जो कुछ हम या तुम सोचते रहते हैं यह वातावरण में रहता है। तुम यह समझते हो कि तुम्हारा मन गन्दा है। दिल में किसी के विरुद्ध सोचते रहते हो। तुम उस के विरुद्ध चाहे कुछ न कहो परन्तु तुम्हारा सोचना व समझना वातावरण में रहता है। जो व्यक्ति गन्दे ख्यालात रखता है वो संसार में विष फैलाता है, यह विज्ञान है। वो जो कोई व्यक्ति किसी वस्तु की प्रबल खोज करता है तथा खोज में अपने आप को इकट्ठा करता है, उसका मन खाली हो जाता है, उसके मन में Vaccume आ जाता है। मेरी बात को समझ रहे हो या कि नहीं ? जब तुम सच्चे मन से प्रार्थना करते हो तो तुम्हारा मन

खाली हो जायेगा, एक प्रकार की बेहोशी सी आने लग जायेगी। तो प्रकृति में कोई वस्तु खाली नहीं रह सकती। तो जिस प्रकार उसकी इच्छा होती है तो वायुमण्डल अर्थात् Atmosphere. में लोगों के जो विचार होते हैं वो शक्लें बना कर उनके सामने आते हैं। यह है वो नियम कि मेरा रूप कैसे प्रकट होता है। एक बदमाश है, जो बदमाशी के लिए प्रार्थना करता है वो जो बदमाश व्यक्ति है उसके जो विचार हैं वो आकर के उसको ऐसा तरीका बतायेंगे कि वो चारसौबी कर सके। यह नियम है।

तो इस का वेदों में क्या इलाज है ? केवल शिव-संकल्पमस्तु अर्थात् सदैव अच्छा विचार रखो, अपने विचार को ठीक रखो, किसी से शत्रुता मत करो, किसी से स्वार्थ भावना न रखो ताकि तुम्हारा वह वातावरण दूषित न हो जाये। मैं बहुत गन्दा व्यक्ति रहा हूं। एक बार मैं दाता दयाल के दरबार में सत्संग में बैठा हुआ था। मेरे मन के अन्तर भिन्न-

भिन्न प्रकार की दूषित फिल्में पैदा होने लगीं तो दाता दयाल ने Topic बदला । कहने लगे भई, सत्संग में आकर दूषित विचार नहीं रखने चाहिएं । वो ज्यों-ज्यों कहते गये मेरा मन काबू न आया । फिर कहने लगे—फ़कीर, तुमको कह रहा हूं । मेरा मन फिर भी काबू न आया । वंसधारी मैनेजर था । कहने लगे—वंसधारी लाल, इस फ़कीर को ले जाओ तथा वहां खड़ा करके सौ जूते इसके सिर पर मारो । सत्संग में आता है तथा सत्संग गन्दा करता है । यह विचार की Philosophy है । जिस मकान में तुम रहते हो यदि वहां कोई गन्दा व्यक्ति रहा हो तो उसके दूषित विचार वहां रहेंगे । तो मन को साफ करने का साधन क्या है ? आप गृहस्थी हैं, आप मन को कैसे साफ कर सकते हैं ? सारा जीवन तो आपने विषय-विकार में काटा । हाय-हाय, मेरा-मेरा, मैं-मैं करते रहे तथा अन्त समय में यह चाहते हो कि तुमको मुक्ति मिल जाये । कौन भड़ुआ तुमको मुक्ति देगा ? हां, इसका इलाज मैंने बता दिया कि अपने जीवन में मरने से पहले किसी भी स्थूल पदार्थ से मोह करना छोड़ दो । प्रेम

तो करो लेकिन मोह करना छोड़ दो जब तुम मोह नहीं करोगे तो वो तुम्हारे सामने नहीं आयेगा। जिस तरह मैं आप लोगों से प्रेम करता हूं। मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं है। आप लोग कभी भी मेरे स्वप्न में नहीं आवे। स्वप्न में या तो अभ्यास करता रहता हूं या प्रकाश देखता रहता हूं या रेलगाड़ी या तार देखता रहता हूं या बीबी साहिबा आ जाती हैं। बदली हो रही है, पास लिया हुआ है, गाड़ी में सामान ज्यादा होने से बुक हो रहा है। वो क्यों आते हैं? क्योंकि मैंने अपने स्वार्थ के लिए उनसे प्रेम किया। यह सच्चाई है जो मैं आपको बता रहा हूं।

दुविधा के बन्द खोल बहुरिया, मन के मैल धोवाई।

दुविधा अर्थात् किसी वस्तु का निर्णय न कर पाना। मैं जो सत्संग देता हूं ऐसा देता हूं कि दूसरे व्यक्ति को, जो मैं कहता हूं उस पर विश्वास हो जाये। सुनने वालों को मेरे वचनों पर सन्देह न हो। अब अमल करना तुम्हारा काम है, मेरा नहीं। इसका क्या

इलाज है ? अपनी संगत अच्छी रखो,अपने हमख्याों से मिलो। मगर दुनिया में रहते हुए सबसे मिलना पड़ता है तो दूसरे से जितना मतलब है उतनी ही बात करो। तुम दुकानदार हो, तुम्हारे पास ग्राहक आते हैं, उनसे मिलो लेकिन उनके साथ उतना ही सम्बन्ध रखो जितना ठीक हो। उनमें मोह नहीं होना चाहिए। सारा झगड़ा मोह का है और कुछ नहीं। तो दुविधा क्या है ? अर्थात् किसी बात का निर्णय न होना कि मैं क्या करूं, क्या न करूं। यह करूं तब बचूंगा या यह करूं तो तब बचूंगा। मैंने उसका निर्णय कर दिया कि यदि कोई व्यक्ति आवागमन से बचना चाहता है उसका वैज्ञानिक नियमानुसार एक ही इलाज है कि मरने से पहले व्यक्ति के अन्तर किसी भी स्थूल पदार्थ का मोह न हो। मगर आप इस मोह को रखने के लिए विवश हैं क्योंकि मन को भिन्न-२ प्रकार के विचार उठाने की आदत पड़ी हुई है। इस लिए मन की आदत को दूर करने के लिए सुमिरन व ध्यान है। ताकि जब तुम सुमिरन करो तो भिन्न-२ प्रकार के ख्यालात रुकेंगे कि नहीं रुकेंगे।

तो जब तुमको अन्तर में सुमिरन व ध्यान करने में दूसरे ख्यालात को रोकने की आदत हो जायेगी तो अन्त समय आने पर तुम ने सत्संग सुना हुआ है तो फिर जो ख्यालात तुम्हारे अन्तर आयेंगे उनसे तुम बच जाओगे। मेरे पर तो आप लोगों ने दया कर दी। जब से मुझे यह विश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह मेरे अपने मन का ख्याल है तो मैं मन को छोड़ देता हूं। अब मेरा जो साधन है वह यह कि मैं मन का साधन नहीं करता बल्कि केवल प्रकाश और शब्द का साधन करता हूं। न दाता दयाल का रूप बनाता हूं न कुछ, न कुछ। केवल प्रकाश और शब्द को लेता हूं। इस लिए सुमिरन, ध्यान और भजन यह हैं क्या ? सुमिरन और ध्यान से क्या होगा ? तुम्हारे मन की इच्छाशक्ति बढ़ जायेगी। तुमको अपने मन को रोकने की शक्ति मिल जायेगी। मेरी बात को समझ गये कि नहीं ? और जब शब्द को सुनोगे तो मन अपने आप ही समाप्त हो जायेगा। तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।

चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई।

95 बर्ष का हो गया हूं। अपने आप को पूछता हूं, ओ फ़कीर! लोगों को उपदेश करता है तूने क्या किया? मैं जो कुछ कहता हूं वो यही है कि मैं आप लोगों में से किसी से प्रेम नहीं करता। यह मेरे पिछले जन्म के खोटे कर्म थे। मैं समझता हूं कि मैंने पिछले जन्म में बहुत गन्दे काम किये थे जो मुझे यह काम करना पड़ा। आप लोगों की संगत से मुझे हानि भी होती है। यदि मैं आप लोगों से प्यार करूं तो मेरा नुक्सान भी होगा। आपकी Radiation मुझे खा जायेगी। यह तो स्वाभाविक है कि एक की Radiation दूसरे के पास जाती है। तुम्हारी मेरे पास आती है और मेरी तुम्हारे पास जाती है। तो मैं तभी बच सकता हूं जब मैं तुमसे कोई प्यार न करूं, आशा और स्वार्थ न रखूं तथा तुम्हारे प्रेम के बदले में निष्काम सेवा जैसी, मेरे से हो सकती है मैं कर देता हूं। पीरेमुगाँ! अपना बुढ़ापा है। मैंने चले जाना है तथा तुमने भी चले जाना है। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कर जाऊंगा। हो सकता है कि मैंने

जो कुछ समझा हो सारा ग़लत हो। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा यह ठीक है। मेरी समझ में जो आया, मैंने कहा।

गंदड़ वाह स्टेशन पर दाता ने जब मुझे यह काम दिया तो मैं करना नहीं चाहता था। मैं इसी बात में प्रसन्न था कि दाता का रूप मेरे अन्तर प्रकट होता है, मैं पहुंच गया। मैं तो यही सोचता था। उस समय उन्होंने कहा, मूर्ख ! तू अभी अधूरा है, सत्संगी तेरा बेड़ा पार कर देंगे । तो आप लोग इस आयु में मेरे सत्तगुरु हैं। सत्संगियों के अनुभव से जब मैंने सुना कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है, मैं नहीं होता तो मुझे मन के रूप का पता लगा। मन के रूप का ज्ञान होने से मैं मन के चक्कर से निकल जाता हूं। मगर सुनिए, मैं 'मैं' में फंस जाता हूं। खबर नहीं कि मेरा क्या अञ्जाम हो।

पालन हार द्वार हैं ठाढ़े अब काहे पछिताई।
कहत कबीर सुनो री बहुरिया चित्त अंजन दे आई।

मन के अन्दर ख्यालात फुरते हैं तो फुरने दो। फुरने के बाद स्वयं साफ हो जाते हैं। मगर चित्त को साफ करो। इतना ही काफी है। मैं ज्यादा बोल नहीं सकता। आप लोग आ गये हैं। मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। यह माई मेरे पास आई, बैठी, क्या मैं फूंक मार सकता हूं? नहीं, यह झूठ है। मैं तो आप को केवल सच्चा मार्ग बता सकता हूं वो भी जो मैंने समझा है। मैं यह भी दावा नहीं करता। देखो, मैंने 1942 के बाद न तो किसी को नाम ही दिया तथा न ही शिष्य बनाया। जहां जाता हूं सैकड़ों, हज़ारों व्यक्ति मेरे पीछे फिरते हैं। यह क्या खेल है? यह भगवान् की लीला है। मुझे नहीं पता। लोग मेरे सम्बन्ध में इतने चमत्कार बताते हैं और यदि मैं झूठ बोलूं तो मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े। मुझे कुछ पता नहीं होता। मैं कहीं नहीं जाता तथा न ही मुझे पता होता है। तो मैं किस परिणाम पर आया? कि ऐ इन्सान! यह सब तेरा अपना विश्वास, अपनी श्रद्धा और तेरा अपना प्रेम है। मैं नहीं कहता कि तुम मुझ को प्रेम करो। जिस

रूप से भी तुमको प्रेम है, जिसके भी तुम चेले हो, उस गुरु के रूप में उस मालिक को मानो। यदि मुझे मानते हो तो मत समझो कि तुम्हारा गुरु होशियारपुर में रहता है। यह ग़लत है। कबीर साहिब कहते हैं :—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अन्ध,
दुःखी होय संसार में आगे यम का फन्द।

कबीर साहिब कहते हैं कि गुरु को मनुष्य जानने वाले अन्धे हैं अर्थात् वो अज्ञानी हैं। वो सांसारिक दुःखों से नहीं बच सकते। मैं किसी धर्म का अनुयायी नहीं हूं, मैंने मानव बनो की आवाज उठाई है। मेरी शिक्षा केवल मानवता की है। फिर क्या करना है? अपने विचार को ठीक रखो। तुम देखते हो कि जब स्वप्न का विचार तुम्हारे शरीर पर प्रभाव डालता है तो जागते हुए तुम जो सोचते हो इसका प्रभाव तुम्हारे पर क्यों नहीं पड़ेगा? यह तो विज्ञान है। अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ घृणा, शत्रुता और द्वेष मत रखो। सांसारिक लोगों के

लिए सच्चाई यह है (क्योंकि इनको मुक्ति की तो आवश्यकता नहीं) कि जो कुछ चाहते हो वो अपने मन में रखो तथा गुरु स्वरूप का ध्यान करो। तुम्हारी इच्छा है कि गुरु स्वरूप को नहीं मानते तो राम का ध्यान करो। मगर एक का करो। उस मालिक का एक रूप मानो तथा ध्यान करो। वो तुम्हारे अन्तर है। सच्चे दिल से मांगा करो न मिले तो मैं जिम्मेवार हूं। लोगों को मिलता है। हज़ारों व्यक्ति मेरा ध्यान करते हैं। मेरे तो बाप को पता नहीं होता उनके अपने ही विश्वास से उनके काम हो जाते हैं। आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया। अधिक बोला नहीं जाता। सब को राधास्वामी!

महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज की अन्तिम रचनाएँ जो कि अधूरी ही रह गईं ।

तिन्सई

1. विना स्वार्थ के काम को, नर करे अंगीकार,
   जैसे पीना चाय का, मुंह में चुरट सिगार।
2. नम्र भाव पर शत्रु के, कभी न कर विश्वास,
   रहे बिनौला बीच में, ऊपर नर्म कपास।
3. घर में आदर मान की इच्छा राख न मन,
   मोती कन्या रत्न का, ज्यों घर में हो पतन।
4. निज घर के सहवास में, संकट सहें सब कोय,
   जैसे फूल गुलाब के, पेड़ में कांटा होय।
5. अपने कर्म, स्वभाव, गुण, काम करें सब लोग,
   नीर कशीर लें हंस गण, बगुला मछली भोग।
6. सुनी सुनाई बात पढ़, सभा में वाद विवाद,
   व्याख्यान शृंगाररस, कुआरा पाये न स्वाद।
7. ब्रह्माकार निवृति है, अहं ब्रह्म की अलाप,
   ऐसे नर संसार में, महा करें संताप।
8. थोड़ी संपत्त पाय कर, क्षुद्र के मन में घमंड,
   नदी तलाब उमड़ चले, थोड़ी नीर प्रचंड।
9. सहज योग के मर्म को, लख पावे कोई संत,

अन्धे को मिला नहीं, नैनसुख फूले ऋतु वसन्त ।

10. शक्ति गई निर्धन वना, अब क्यों करे गुमान,
साबन का अंधा हुआ, हरियाली का ध्यान ।

11. लिख पढ़ उपदेश दें, धूआंधार व्याख्यान,
जूठी पत्तल चाट कर, भौंके जैसे स्वान ।

12. लिंग अरघ दो चिन्ह हैं, सृष्टि कर्म के धर्म,
खण्डन करते नित फिरे, मूर्ख न जाने मर्म ।

13. बैरी, शत्रु की नम्रता का, चित्त में घर नहीं ध्यान,
बाढ़ का पानी पांव पड़ करदे, घर की हान ।

14. बूंद सराहिये सीप कै, विरला बूझे कोय,
आंख का पानी जब गिरा, मोती कभी बूंद न होय ।

15. गुड़-गुड़ हुक्का बोलता, मीठा गुड़ न बने,
ऊख का रस तब गुड़ बने, अग्नि में जब भुने ।

16. वृंदावन में कृष्ण जी, राधा गोकुल मांह,
राधाकृष्ण मिले आयें, उनकी रहे छांह ।

17. शुष्क भक्ति से क्या बने, इष्ट न आबे जो वास,
शुष्क बनौड़े गिरे नित, औटे शुष्क कपास ।

18. मन्द सुगन्ध पवन, वहे अपने-2 सुभाय,
एक खिलावै कली को, पत्ते एक सुखाय ।

19. नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल जान,
शान्त करे भय को, शीतल वचन सुजान ।

—o☺o—

शायरी में मेरे आओ गिरिया और जारी नहीं,
दिल दिही की शान में, मेरे दिल आजारी नहीं ।
आप पर आशिक हूं, किस के इश्क का सौदा करू,
छोड़ कर उस जात को, कोई खरीदारी नहीं ।

रूह की बुलन्द परवाजी

सुन कर बांगें आसमानी उड़ चली,
उड़ चली बेपर के अब मिसले परी।
रूह साफी की कसाफत दूर है,
है मुजल्ला ओ मुसफ्फा नूर है।
जिस्मो दिल तक हो गये अज़वस लतीफ,
पहले थी नापाक गंदा और कसीफ।
थी ज़मीनी आसमानी बन गई,
चुस्ती आई पाके चुस्ती तन गई।
जब उड़ी मंज़िल ब मंज़िल रूह पाक,
उड़ लक वे बीम ओ-बाक्।

अपनी रहनी के मुतल्लिक महर्षि जी एक पत्र में लिखते हैं :–

बेकार दिल है शैतां का कारखाना,
दुःख दर्द देता है हर जमां।
बचना है इससे लाज़िम मांगो दुआ,
बर वकत-ए-अमल सुबह ओ मसां।
काटता हूं मैं दिन को दिन से नहीं कटाता,
काट खाता है दिन तब हूं ध्यान लगाता।
इस तौर से दिन अपने गुजारता है यह मिस्कीं,
हासिल है आराम, राहत और तस्कीन।

मिलाया फ़कीर ने

(दरवेश जालन्धरी द्वारा लिखित)

सोये हुए जगत को जगाया फ़कीर ने,
संगीत सत्यता का सुनाया फ़कीर ने।
नारा मनुष्यता का लगाया फ़कीर ने,
मानव धर्म का झंडा उठाया फ़कीर ने।
अज्ञान का अन्धकार मिटाया फ़कीर ने,
दुनिया में ज्ञान दीप जलाया फ़कीर ने।
घट बीच खुद को खुद से मिलाया फ़कीर ने,
परदा दुई का दिल से उठाया फ़कीर ने।
जीवों को सीधा रास्ता दिखाया फ़कीर ने,
दुःखियों को अपने सीने लगाया फ़कीर ने।
जीने का ढंग जग को सिखाया फ़कीर ने,
दुनिया को सार भेद समझाया फ़कीर ने।
चरणों में अपने मुझ को बिठाया फ़कीर ने,
दरवेश को दरवेश बनाया फ़कीर ने।

गुरु का रूप

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी ।।
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें ब्यौहारा,
सो प्राणी अति मूढ़ हैं, कैसे जायें भव पारा,
देह के बने अभिमानी ।। भरम में०

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले,
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके,
गुरु तत्त्व न जानी ।। भरम में०

गुर को मानुष जानकर, मानुष करो विचार,
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार,
मोह के फाँस फँसानी ।। भरम में०

गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल,
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल,
पड़े योनि की खानी ।। भरम में०

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट,
इष्ट आदर्श को ना लखे, समझो उसे कनिष्ट,
बात बूझे मन मानी ।। भरम में०

गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान,
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान,
नहीं गुरु रूप पिछानी ।। भरम में०

चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास,
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास,
रहे गुरु पद घट ठानी ।। भरम में०

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप,
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप,
नर जन्म गँवानी ।। भरम में०

गुरु ज्ञान का तत्त्व है, गुरु ज्ञान का सार,
गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भव भय भार,
कमल जैसी गति आनी ।। भरम में०

राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय,
जो नहीं माने बचन को, उरझ उरझ उरझाय,
कौन समझे यह बानी ।। भरम में०

हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज 24-12-81 को जहां मानवता मन्दिर में पधारे। हजूर परम दयाल जी महाराज के आसन पर बैठ कर तीन सत्संग दिये। कई सज्जन मेरे पास आये कहने लगे कि हजूर परम दयाल जी महाराज ने दो व्यक्तियों को क्यों गुरु बनाया ? ऐसे पत्र बाहर से भी आते रहते हैं। और यह प्रश्न हजूर परम दयाल जी महाराज के जीवन में भी लोग किया करते थे। श्रद्धा तथा विश्वास एक पर हो सकता है। इष्ट भी एक होता है । इसलिए मानवता मन्दिर में भी एक गुरु होना चाहिए ताकि लोगों को सहारा मिल सके। तब हजूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज का उपरोक्त शब्द याद आया तथा अपना पिछला जीवन भी सामने आया । मैं भी इसी तरह ही था। गुरु का वास्तविक रूप विना सत्तगुरु की कृपा के पता नहीं लग सकता। मुझे हजूर परम दयाल जी महाराज ने 20-3-77 को सत्संग का काम सौंपते हुये आम सत्संग में पगड़ी बांधी थी, जिसका कारण यह बताया था कि यह व्यक्ति न रोता है न ही हंसता है। मुझे तो कोई पता नहीं था। मेरे अन्तर से स्वाभाविक ही यह शब्द निकला :—

जन्म जन्म से बिछुड़ी आई
भटक रही थी राह न पाई,
भाग जगा दर तेरे आई,
चरण शरण दे अंग लगाई,
ऐ दाता ! तेरी प्रभुताई,
दयाधार कर बात बताई,
यह पगड़ी है किसे बन्धाई,
मेरी कहाँ, यह तेरी बडाई।

यह शब्द मस्ती में पढ़ते हुए मैंने वो पगडी हजूर परम दयाल जी महाराज के चरणों पर रख दी तथा उन्होंने फिर मेरे सिर पर रख दी। उस समय पर मैंने पूर्ण रूप से तो नहीं मगर थोड़ा बहुत गुरु का रूप समझ लिया हुआ था। निबल, अबल, अज्ञानी जीव को बाहरी सहारे की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए 27-12-81 रविवार के सत्संग में पहले मैंने अपने विचार प्रकट किये तथा कहा कि जिस उद्देश्य के लिए हजूर परम दयाल जी महाराज ने मानवता मन्दिर की स्थापना की तथा सारा जीवन समझाते रहे, मगर बेचारे जीव समझ नहीं सके। उनकी समस्या भी सत्य है। क्योंकि हजूर परम दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे जीवों को आराम पहुंचाने का कर्त्तव्य सौंपा था। इसलिए मैंने सत्संगियों की भावनाओं का सत्कार करते हुए कहा—कि आप केवल हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज को ही गुरु मानें तथा भरी सभा में हजूर मानव दयाल जी के चरणों में मैंने सिर झुका कर कहा कि आज से लेकर मेरे भी यही गुरु

है हजूर परम दयाल जी महाराज ने मुझे गुरु नहीं बनाया तथा न ही कोई गद्दी दी। मुझे काम दिया था ताकि मेरी त्रुटियां दूर हो जाये तथा मेरा अपना कल्याण हो जाय। जब तक हजूर मानव दयाल जी महाराज अप्रैल 1982 में बैसाखी के अवसर पर नहीं आते, मैं उनकी अनुपस्थिति में यथाशक्ति सत्संगियो की सेवा करता रहूंगा। वैसे भी हजूर परम दयाल जी महाराज ने वसीयत नामा के अनुसार अपनी और मानव दयाल जी महाराज की अनुपस्थिति में यह काम करने की आज्ञा दी थी। हाँ, यह अवश्य लिखा था कि जब तक दो बर्ष पश्चात् मानव दयाल जी महाराज आ जायेंगें और फिर जब वो जहां नहीं होंगे, मैं उनकी जगह सत्तगुरु का काम करूंगा।

अब आगे के लिए मन्दिर का सारा कार्यभार हज़ूर मानव दयाल जी महाराज पर होगा और मैं बाहर न जाया करूंगा। सब भाईयों से करबद्ध प्रार्थना है कि अब पत्र व्यवहार जनरल सैक्रेटरी मानवता मन्दिर होशियारपुर के नाम से किया करें।

एम०आर०भगत०

—०:०—

कर्म भोग या मौज़

परम सन्त, परम दयाल पूर्ण धनी, फ़कीर चन्द जी महाराज के भौतिक शरीर त्याग कर निज धाम सिधारने के पश्चात् "मानव मन्दिर" पत्रिका भविष्य में प्रकाशित होती रहेगी। हजूर संसार के लिए एक ज्ञान का भण्डार छोड़ गये। इस ज्ञान में विशेषता यह है कि वे जीवन भर सार साधन, अभ्यास करके निज अनुभव के आधार पर सन्तमत में जो परिवर्तन लाये वह अपूर्व है।

उनके साहित्य को भी जैसे कि वो अपने जीवन-काल में बिना मूल्य भेजा करते थे, उसी प्रकार जनता के हित के लिए अब भी भेजा जाता रहेगा। फ़कीर लायब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट होशियारपुर ये दोनों सेवाएं प्रचलित रखेगा और यथाशक्ति उनकी जलाई हुई ज्योति को जलाये रखेगा।

यदि कोई सज्जन मानवता मन्दिर के इस काम को सर्व साधारण के लिए लाभदायक समझता हो और विशेषकर अधिकारी जीवों को शान्ति का मार्ग मिलता हो तो वे जो इच्छा हो, सहायता कर सकते हैं।

—सम्पादक

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1, ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3, ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4, ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6, ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7, ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America,
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17 Republic day Message 26-1-81. 18 Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1 अनुभवसार। 2 सन्तमत लेखमाला भाग 1
3 सन्तमत लेखमाला भाग 2

—o⊙o—

सितम्बर के अंक से अगे :—

बोलती । बाबा ! वह झूठ क्यों बोलेगी । बाबा ! यह घटना पिछले सप्ताह की हैं । मैं अपनीं नौकरी पर गया हुआ था मेरी पत्नी घर पर अकेली थी । मेरे पड़ोसी के घर आग लग गई । यह आग ऐसी भंयकर थी कि सारा का सारे घर जल गया और आग मेरे घर के पिछले कमरे तक पहुंच गई । मेरी पत्नी आग की लपटों को देख कर डर गई । वह बिलकुल बेबस थी । मैं आपका चित्र सदा अपने कमरे में लगाये रखता हूं । मेरी पत्नी उस कमरे में जा कर आपके चित्र के सामने खड़ी हो गई और रो-रो कर चित्र से प्रार्थना करने लगी कि आप उसकी सहायता को आयें । उसी समय चित्र से प्रकाश निकला और उस प्रकाश में से आप निकले और बाल्टी उठा कर उसमें पानी भर-भर कर आग को बुझाने लगे और कुछ क्षणों में आग बुझ गई । आग के बुझाने के बाद आप अदृश्य हो गये, मेरी पत्नी आपका धन्यवाद भी न कर सकी । अब मैं यह तुच्छ भेंट आपके पास ले कर आया हूं । बाबा ! मुझे निराश मत कीजिये ।" फ़कीर

बाबा ने बड़ी नम्रता से कहा, "मेरे प्यारे ! इन सब बातों के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। भले आदमी ! मैंने तो जीवन में तुम्हें पहली बार देखा है। मैं तो तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का नाम भी नहीं जानता। भाई ! मैंने तुम्हारे घर की आग नहीं बुझाई। मुझे इस भ्रम में पैसे मत दो कि मैंने तुम्हारे घर की आग बुझाई है।"

फ़कीर बाबा के आशीर्वाद से सैकड़ों ऐसी स्त्रियों को पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके विवाह के कई वर्ष बाद तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। इन स्त्रियों में से एक स्त्री ऐसी भी थी जिसके जीवन में कभी मासिक धर्म नहीं हुआ था। ऐसी स्त्री को भी फ़कीर बाबा के प्रसाद तथा आशीर्वाद से पुत्र पैदा हुआ। एक दूसरी महिला ऐसी थी जिसकी आयु पचास वर्ष से ऊपर थी और जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया था और जिसकी अभी सन्तान नहीं हुई थी। फ़कीर बाबा के प्रसाद तथा आशीर्वाद से उस महिला को भी पुत्र उत्पन्न हुआ। फ़कीर बाबा ने इस घटना की सूचना अमेरिका से आये हुये विख्यात ए० आर० ई०के

ग्रुप को दी, जो उस समय भारत का भ्रमण करते हुए देहली में फ़कीर बाबा के दर्शन के लिए आया हुआ था। यह बात सन् 1969 की है। इस ग्रुप में से एक व्यक्ति ने फ़कीर बाबा से प्रश्न किया। "your Holiness! हम यह अनुभव करते हैं कि कुछ सिद्धियां ऐसी होती हैं, जो केवल आध्यात्मिक लोगों को ही प्राप्त होती हैं सभी को नहीं। परन्तु फिर भी कभी-कभी यह देखने में आया है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिनमें आध्यात्मिकता न होते हुये भी मानसिक सिद्धियां होती हैं। आपका इन विचित्र सिद्धियों तथा आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में क्या विचार हैं ?"

फ़कीर बाबा ने उत्तर दिया, "क्या मैं आपसे एक प्रश्न कर सकता हूं ? क्या किसी मनुष्य के लिए यह सम्भव है कि वह एक दूसरे व्यक्ति को आध्यात्मिक विकास में सहायता दे ? जहां तक मन की शक्ति का सम्बन्ध है मैं यह स्वीकार करता हूं कि वह ज़रुर है। किन्तु उस मानसिक शक्ति का प्रभाव केवल उन्हीं लोगों पर होता है जो दृढ़ विश्वसा

रखते है। मैं इस विषय मैं आपको एक सच्ची घटना का उदाहरण देता हूं। "कुछ वर्ष पहले की घटना है कि मोतीलाल नामक एक धनवान् व्यक्ति (जो इन्दौर में रहता था) की पत्नी को डाक्टरों ने बता दिया था कि उसके कभी बच्चा नहीं होगा। जब मैं इन्दौर का दौरा कर रहा था, उस समय सेठ मोतीलाल तथा उसकी पत्नी मेरे पास आये। उस समय मोतीलाल की आयु 55 वर्ष की थी और उसकी पत्नी की आयु 50 वर्ष की। पत्नी ने रो-रो कर मुझ से प्रार्थना की कि मैं उसे पुत्र होने का आशीर्वाद दूं। मैंने उसे एक आम देते हुए कहा, "यह आम खा लो मालिक ने चाहा तो तुम्हें पुत्र पैदा हो जायेगा।" उस महिला ने आम ले कर खा लिया। कुछ दिन के बाद वह अपने डाक्टर के पास जा कर बोली कि अब उसे अवश्य लड़का होगा क्योंकि उसने बाबा का प्रसाद खा लिया है। वास्तव में ही एक वर्ष के पश्चात् उस महिला के लड़का हुआ और मैंने उसका नाम श्रीभगवान् रखा। और अब एक बात और भी सुनो! मेरी अपनी लड़की के विवाह को चौदह वर्ष से

भी अधिक हो गये हैं, उसकी अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई। मैंने एक बार नहीं बीसियों बार उसे उसी भाव से प्रसाद दिया जैसे मैंने मोतीलाल की पत्नी को दिया था। परन्तु मेरी लड़की के कोई सन्तान नहीं हुई। इसका कारण यह है कि मन की शक्ति की सफलता का मूल कारण मनुष्य का अपना ही विश्वास है। मनुष्य की इच्छाशक्ति काम अवश्य करती है, किन्तु वह सफल तभी होती है जब विश्वास दृढ़ होता है। जहां पर विश्वास डगमगा जाता है, वहां सन्त भी सहायता नहीं कर सकते।

यहां पर एक और उदाहरण देना भी उचित रहेगा। यह उदाहरण एक सिक्ख पति पत्नी का है, फ़कीर बाबा से बार-बार प्रार्थना की कि बाबा उन्हें पुत्र होने का आशीर्वाद दें। उन्होने फ़कीर बाबा को यह भी बताया कि ज्योतिषियों ने उन्हें बताया है कि उनकी कुण्डली में सन्तान नहीं लिखी। इस बात को सुन कर फ़कीर बाबा बोले "जब ज्योतिषियों ने कह दिया है कि तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है तो तुम मेरे पास क्यों आये ? ज्योतिषी झूठे नहीं हो सकते।

इसलिए भले लोगो ! अपने भाग्य को स्वीकार करके शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करो इस पर सिक्ख सज्जन की पत्नी फूट-फूट कर रोने लगी और बोली "बाबा मुझे पुत्र चाहिए ! बाबा मुझे पुत्र होने का प्रसाद दो और आशीर्वाद दो । आप सद पुरुष हो बाबा आप सब सम्भव कर सकते हो ।" फ़कीर बाबा दयालु तो हैं ही किसी का दुःख नहीं देख सकते उस महिला के दुःख से प्रभावित हो कर बोले, देखो बेटी ! तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है, परन्तु ज़िद कर रही हो । मैं तुम्हें प्रसाद दूंगा, तुहारे बच्चा तो हो जायेगा, परन्तु बच्चा होने के बाद तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी । क्या तुम मरने के लिए तैयार हो ?" उस स्त्री की पुत्र प्राप्त करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि उसको मौत की भी परवाह नहीं रही । उसने कहा, "बाबा ! मुझे प्रसाद दो, मुझे पुत्र चाहिए मैं मर भी जाऊं तो मुझे इसका तनिक मात्र भी दुःख नहीं होगा मैं मरने से नहीं डरती । मैं मर जाऊंगी लेकिन मेरा लड़का तो रहेंगा, मुझे लड़का चाहिये बाबा ।"

फ़कीर बाबा ने उसे प्रसाद दिया और कुछ समय बाद वह महिला गर्भवती हो गई । उसके गर्भवती होने के समाचार से सिक्ख सज्जन को इसलिए विशेष प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि वह जानता था कि पुत्र पैदा होने के बाद उसकी पत्नी चली जायेगी । वह अपनी पत्नी के मरने का विचार करके कांप जाता । जब बच्चा पैदा होने में केवल तीन महीने ही बाकी रह गये तो सिक्ख सज्जन फ़कीर बाबा के पास गया और रो-रो कर बोला, "दयालु बाबा ! मेरी पत्नी को मरने मत दो । बाबा ! उसे बचा लो मैं जीवन भर आपका आभारी रहूंगा । मेरी पत्नी को बचा लो । आशीर्वाद दो बाबा कि मेरी पत्नी और बच्चा दोनों बच जायें ।"

दया के भण्डार फ़कीर बाबा उस सज्जन का दुःख नहीं देख सके और बोले "भले पुरुष सुनो ! तुम्हारी पत्नी मरेगी नहीं, परन्तु उसके लिए तुम्हें एक शर्त माननी पड़ेगी ।"

सिक्ख सज्जन नम्रता से बोले "बाबा ! मैं कोई

भी शर्त मानने के लिए तैयार हूं । मेरी पत्नी को बचा लो बाबा !"

फ़क़ीर बाबा बोले "देखो आज से और जब तक तुम्हारा बच्चा नहीं होता तुम रोज़ मुझे 12 बजे से 1 बजे के बीच जहां पर भी मैं होऊं मुझ से मिलने आया करो । उसमें नागा नहीं होना चाहिए । रोज़ आना पड़ेगा चाहें पॉच मिनट के लिए ही क्यों न न आओ ।"

वह सिक्ख सज्जन उस दिन के बाद प्रतिदिन दोपहर को 12 से 1 बजे के बीच में दयालु फ़क़ीर बाबा के दर्शन करने के लिए जाने लगा । आँधी हो, तूफ़ान हो, गर्मी हो, लू हो, कुछ भी हो उस सज्जन ने फ़क़ीर बाबा की आज्ञा का उल्लंघन एक दिन भी नहीं किया । जहां भी फ़क़ीर बाबा होते वह वहीं जाता और रोज़ उनका आशीर्वाद लेता । तीन महीने के बाद उसके सुन्दर लड़का पैदा हुआ और उसकी पत्नी मरी नहीं ।

अब प्रश्न यह होता है कि फ़क़ीर बाबा ने उस सज्जन को प्रतिदिन अपने पास आने को क्यों कहा ?

आर्शीर्वाद तो वह इस शर्त के विना भी दे सकते थे। फ़कीर बाबा का कहना है कि चमत्कार मनुष्य के अपने ही मन की शक्ति के कारण घटित होते हैं और मन की शक्ति मन को एकाग्र करने से बढ़ती है और अनुशासन मन को एकाग्र करने में सहायता देता है। इस लिए अनुशासन का जीवन में बहुत महत्व है। प्रतिदिन फकीर बाबा के दर्शन करने से सिक्ख सज्जन को समय पर जाने का अनुशासन रखना पड़ा इससे उसका मन एकाग्र हो गया और उसके मन की शक्ति को सहायता मिली। अगले अध्याय में चमत्कारों की प्राकृतिक व्याख्या दी जायेगी। इससे पहले कि हम फकीर बाबा के उपदेशों का दार्शनिक तथा वैज्ञानिक महत्व बतलायें एक और आकर्षक चमत्कार का उदाहरण यहां बताना उचित होगा।

यह घटना लगभग 25 वर्ष पहले की है। फ़कीर बाबा दक्षिण भारत में हैदराबाद के पास कहीं सत्संग करा रहे थे। उनके सत्संगियों में बोरगवा महादेव नाम का एक धनवान व्यापारी भी उपस्थित था। वह अपने प्रदेश का माना हुआ व्यापारी था। उसके साथ-२ उसके लड़के (जो प्रौढ़ थे और जो उसका व्यापार भी सम्भालते थे)

भी वहाँ आये हुए थे। बोरगवा महादेव बहुत सी बीमारियों से पीड़ित था। डाक्टरों के पास उसकी उन बीमारियों का कोई इलाज नहीं था और वह मरने के निकट था। सत्संग समाप्त होने के बाद वह फ़कीर बाबा के पास आ कर बोला, "ऐ मेरे मालिक! मैं अपने पिछले जन्म के बुरे कर्मों के कारण इस जन्म में बहुत सी भयंकर बीमारियों से घिरा हुआ हूं। मैंने सुना है कि सन्त हमें पाप कर्मों से बचा सकते हैं। आप सन्त ही नहीं सत्तपुरुष भी हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे बुरे कर्मों का नाश कीजिये।" दयालु फ़कीर बाबा ने उत्तर दिया, "बोरगवा महादेव! मैं तुम्हारे बुरे कर्मों का नाश कर दूंगा, तुम स्वस्थ हो सकते हो परन्तु उसके बदले में तुम्हें कुछ मुझे दान में देना होगा।"

बोरगवा महादेव का चेहरा खिल उठा। उसने अपने मन में सोचा कि फ़कीर बाबा अपनी संस्था के लिए एक, दो लाख रुपये का दान चाहते होंगे और एक, दो या चार लाख रुपया उसके लिए कुछ भी नहीं था। उसने प्रसन्न हो कर अपने लड़कों की ओर देखा

और यह जानना चाहा कि वे अपने पिता के स्वास्थ्य के लिए एक, दो लाख रुपये का दान देने के लिए सहमत थे या नहीं। बेटों ने मुस्करा कर अपनी अनुमति दिखाई। बोरगवा महादेव ने प्रसन्न हो कर कहा "आप मालिक हैं, आज्ञा दीजिये महाराज ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।"

फ़कीर बाबा ने कहा "तो जल्दी से पुरोहित को बुलाओ।" सत्संगियों की उपस्थिति में पुरोहित को बुलाया गया। फ़कीर बाबा ने बोरगवा महादेव को कहा, " अब तुम जल हाथ में लो और पुरोहित के मन्त्र पढ़ने के साथ-साथ अपने सभी बुरे कर्मों का संकल्प मुझे दे दो। मैं तुम्हारे सभी पाप कर्म अपने पर ले लूंगा और बाकी तुम्हारे अच्छे कर्म तुम्हें सभी बीमारियों से मुक्त कर देंगे।"

फ़कीर बाबा के इन शब्दों से सभी सत्संगी सन्नाटे में आ गये और बोरगवा महादेव तो भौंचक्का रह गया। उसने तो सोचा था कि बाबा धन का दान मागेंगे, परन्तु उन्होंने तो ऐसा दान मांगा था, जो आज तक किसी ने नहीं मांगा था। बहुत से सत्संगियों को भय

लगा कि इससे बोरगवा महादेब के सभी रोग बाबा को लग जायेंगे, वे सभी चिल्लाये "ऐसा मत करो बोरगवा महादेव ! ऐसे कभी मत करो । अपने रोगों को बाबा को मत दो ।" परन्तु दयालु बाबा ने किसी की एक भी नहीं सुनी । पुरोहित द्वारा मन्त्र पढ़ा गया और बोरगवा महादेव के सभी बुरे कर्मों का संकल्प बाबा को दे दिया गया। इस घटना को लिखते हुए मेरे स्वयं के रोंग खड़े हो रहे हैं और मुझे भगवान् बुद्ध का एक दम ध्यान आ रहा है । एक बार अति दयालु भगवान् बुद्ध ने संसार के लोगों को अनेक दुःखों से त्रस्त पा कर यह बात कही थी "यदि मैं संसार के सभी जीवों के बुरे कर्म अपने पर ले कर उनको दुःखों से मुक्त कर सकूं तो मैं करोड़ों वर्षों तक नरक में रहने के लिए भी तैयार हूं ।"

आश्चर्य की बात है कि बोरगवा महादेव तत्काल स्वस्थ हो गया । उसकी सभी बीमारियां न जाने कहां अदृश्य हो गईं । वह बीस वर्ष और जिया, कभी बीमार नहीं हुआ और अन्त में स्वाभाविक मृत्यु से मरा । बोरगवा महादेव के बेटे सदा बाबा के आभारी रहेंगे ।

अध्याय के आरम्भ में यह बताया गया है कि फ़कीर बाबा चमत्कारों को बहुत महत्त्व नहीं देते क्योंकि मानव जीवन का लक्ष्य तो है आत्मानुभूति तथा ईश्वरानुभूति जो चमत्कारों से परे है। किन्तु करोड़ों में से कोई बिरला ही इस लक्ष्य पर पहुंचता है। अधिकतर लोग तो सांसारिक लाभ चाहते हैं। किसी को पुत्र की इच्छा रहती है किसी को धन की, किसी को पदवी की तो किसी को ख्याति की जब लोगों के मन की इच्छाएं उनके अपने विश्वास के कारण किसी सन्त, महात्मा अथवा गुरु के माध्यम से पूर्ण हो जाती हैं तो वे उन्हें चमत्कार ही लगती हैं और इन चमत्कारों में उनका विश्वास बढ़ जाता है। संसार का ऐसा कोई भी कोना नहीं जहां के लोग चमत्कारों से आकर्षित न होते हों। सभी इन चमत्कारों के बन्धन में हैं उससे ऊपर नहीं उठे। सच्चे सन्त का यह स्वभाव होता है कि वह अपने सत्संगियों के दुःखों को दूर करे। सच्चे सन्त तथा स पुत्तरुष होने के नाते फ़कीर बाबा अपने सत्संगियों को उनके विश्वास के अनुसार उनकी इच्छापूर्ति के लिए आशीर्वाद इसलिए देते हैं कि किसी भी व्यक्ति

की श्रद्धा टूट न जाय। किन्तु वह सदैव इस बात पर भी ज़ोर हैं कि इच्छा करते समय भी मनुष्य को अपना मन तथा विचार शुद्ध रखने चाहिएं। कभी दूसरों की बुराई करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। उनके अनुसार यदि इच्छा सच्चे और शुद्ध मन से की जाये तो अवश्य पूरी होती है। जब वह किसी को आशीर्वाद देते हैं सच्चे तथा पवित्र मन से देते हैं इस लिए ही तो लोगों की इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। जब उनकी इच्छाओं को पूर्ति हो जाती है तो ऐसे लोग श्रद्धा तथा विश्वास के कारण उनका सत्संग सुनने आते हैं। लगातार सत्सग सुनने के कारण उनमें धीरे-२ परिवर्तन होने लगता है और वह आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने लगते हैं। सत्संग में निश्चित समय पर पहुंचने के लिए सत्संगियों को जीवन में भी अनुशासन लाना पड़ता है और अनुशासन पर चलने वाला सत्संगी सत्संग का पूरा लाभ उठा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि चमत्कारों का भी मनुष्य के जीवन में एक विशेष स्थान है।

चमत्कारों की यह व्याख्या, कि मनुष्य का श्रद्धा, विश्वास तथा अनुशासन का पालन करना मन की

शक्ति को बढ़ावा देते हैं और मन की शक्ति ही सब काम सिद्ध कराती है, बड़ी सुन्दर और सन्तोषजनक है। इस व्याख्या से हम दूसरे धर्मों में घटने वाले चमत्कारों को भी ठीक तरह से समझ सकते हैं। हमारा धर्म के प्रति दृष्टिकोण उदार हो जाता है। तब हम यह नहीं कह सकते कि किसी धर्म विशेष में ही विश्वास रखने से ही हमारा उद्धार हो सकता है। हम मानव धर्म को मान कर सभी धर्मों को श्रद्धा की दृष्टि से देख सकते हैं। जब हम सब धर्मों को एक ही ईश्वर की प्राप्ति के अलग-2 र्ग समझ कर शान्ति पूर्वक अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं तो हम किसी भी धर्म के अनुयायी से घृणा नहीं कर सकते।

अब मैं चत्कारों की व्याख्या को और भी स्पष्ट करने के लिए दो उदाहरण और देना चाहूंगा। पिछले दो उदाहरणों में चमत्कार घटने की जो घटनाएँ घटीं उनमें फ़कीर बाबा स्वयं घटनास्थल पर उपस्थित थे और उन्होंने सत्संगियों के विश्वास को बढ़ावा दिया था। किन्तु बहुत से ऐसे उदाहरण भी हैं, जहां फ़कीर बाबा न तो घटनास्थल पर उपस्थित थे और

न ही उन्होंने लाभ उठाने वाले व्यक्तियों के विश्वास को कभी बढ़ावा दिया था। किन्तु बहुत से ऐसे कुछ उदाहरण पिछले अध्यायों में पहले भा दिये जा चुके हैं। यहां मैं दो उदाहरण और दे रहा हूं। इनमें से एक उदाहरण ऐसा है, जिसमें फ़कीर बाबा कैनेडा के एक भयानक जंगल में एक डाक्टर के सामने प्रकट हुए और दूसरी घटना का घटनास्थल भारत का एक छोटा सा कस्बा है जहां पर एक स्कूल मास्टर, जिसने फ़कीर बाबा का कभी नाम नहीं सुना था, ने उनके प्रकट होने से लाभ उठाया। ऐसे चमत्कारों की व्याख्या कुछ और ही होनी चाहिए।

यों तो अमेरिका, अफ़्रीका, कैनेडा तथा अन्य कई देशों में फ़कीर बाबा के रूप के प्रकट होने की कई चमत्कारक घटनाएँ घटी हैं, किन्तु जिस चमत्कारक घटना का यहां वर्णन किया जायेगा वह बहुत ही रोचक है। यह घटना पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री तथा विख्यात डाक्टर जगजीत सिंह पंजाब सरकार से सम्बन्धित है। कुछ वर्ष पूर्व की बात है कि डाक्टर जगजीत सह पंजाब सरकार की ओर से विदेश के दौरे

पर थे। वहां से लौटने के बाद उन्होंने इस रोचक घटना को होशियारपुर, मानवता मन्दिर में स्वयं ही बताया। डाक्टर जगजीत सिंह का कहना है कि वह कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ एक हेलीकौप्टर में कैनेडा के जंगलों का निरीक्षण कर रहे थे। किसी कारण हेलीकौप्टर में कुछ ख़राबी हो गई। आगे बढ़ना ठीक नहीं था सो जहाज़ को शीघ्र ही एक भयानक जंगल में उतारा गया। वह जंगल इतना भयानक था कि सभी उ[illegible]
किसी प्रकार भी वहां किसी से सहायता पाना असम्भव था। सभी लोग इतना बेवश थे कि किसी को इस मुसीबत से बचने का कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था। डाक्टर जगजीत सिंह विशेष रूप से परेशान थे क्योंकि वह अपने देश तथा अपने परिवार से इतनी दूर थे। उन्होंने भारत छोड़ने से पूर्व कभी इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि विदेश में जा कर उनका अन्त इस प्रकार होगा! इस परेशानी में वह जंगल में चलने लगे और अपने साथियों से कुछ दूर चले गये। उनका मन बहुत ही अशान्त था। उनका फ़कीर बाबा में पूर्ण विश्वास था

एक दम उन्हें बाबा का ध्यान आया। उनके चेहरे पर थोड़ी रौनक आ गई। उन्होंने हाथ जोड़ कर श्रद्धा पूर्वक फ़कीर बाबा का ध्यान करके प्रार्थना की "हे फ़कीर बाबा! हम इस भयानक जंगल में फँस गये हैं। यहां से बच निकलने का कोई उपाय नहीं। बाबा, तुम दयालु हो हमारी सहायता करो। हमें इस संकट से बचाओ।"

जगजीत सिंह ने बताया कि अचानक उनके सामने प्रकाश हुआ और उस प्रकाश में से फ़कीर बाबा निकले और बोले "जगजीत सिंह! चिन्ता मत करो। इसी स्थान पर ही अपने साथियों के साथ डटे रहो। ठीक आधे घण्टे के बाद एक दूसरा हेलीकौप्टर आयेगा और आप सब को सुरक्षित स्थान पर ले जायेगा।"

ठीक आधे घण्टे के बाद एक दूसरा हेलीकौप्टर आया और डाक्टर तथा उनके साथियों को सुरक्षित स्थान पर ले गया। डाक्टर जगजीत सिंह का कहना है कि किसने हमारी मुसीबत की कहानी किसी को सुनाई और

किसने दूसरा हेलीकौप्टर वहाँ भेजा, इसका रहस्य आज तक उनकी समझ में नहीं आया । डाक्टर जगजीत सिंह कैनेडा से सीधे इंगलैण्ड गये वहाँ से उन्होंने टेलफोन द्वारा उस पूरी घटना को भारत में फ़कीर बाबा को बताया और उनका कोटि-२ धन्यवाद किया । फ़कीर बाबा इस घटना का पूरा ब्यौस सुनने के बाद बोले, "मालिक की मर्ज़ी ! जगजीत सिंह को बचना था परन्तु मैं तो वहां गया नहीं, मैं तो होशियारपुर में ही था।"

इस घटना में फ़कीर बाबा डाक्टर जगजीत सिंह की प्रार्थना सुनने के लिए कैनेडा के जंगल में स्वयं उपस्थित नहीं थे और पिछले उदाहरणों की भाँति उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जगजीत सिंह के विश्वास को बढ़ावा भी नहीं दिया । फिर भी उनका रूप प्रकट हुआ और उस रूप ने जगजीत सिंह की सहायता की, इसकी व्याख्या क्या हो सकती है ?

फ़कीर बाबा कहते हैं कि अर्थशास्त्र का एक प्रसिद्ध नियम है जिसे "मांग और पूर्ति" का नियम

(Principle of Demand and Supply) कहते हैं इस नियम के अनुसार जिस वस्तु की जितनी मांग होती है, उसकी पूर्ति उतने उत्पादन से पूरी की जाती है। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक जगत् का भी "मांग और पूर्ति" का नियम है, जिसे आध्यात्मिक मांग और पूर्ति का नियम, (Priniple of Spiritual Demand and Supply) कहते है । इसके अनुसार जब कोई व्यक्ति ईश्वर, गुरु, इष्टदेव अथवा प्रकृति से किसी भी वस्तु की सच्चे दिल तथा दृढ़ विश्वास से मांग करता है, उस समय उसका मन पूरी तरह से एकाग्र हो जाता है और वह एक प्रबल विचार को जन्म देता है और ईश्वर या इष्ट उस मांग को पूर्ण करने में सहायता देता है । इच्छा करने वाले की एकाग्रता जितनी अधिक होती है, उतनी ही जल्दी उसे सफलता मिलती है । डाक्टर जगजीत सिंह जब ऐसी भयंकर परिस्थिति में थे जहां आशा की एक भी किरण दिखाई नहीं देती थी । उस समय उनका मन एक दम फ़कीर बाबा के ध्यान में इतना तल्लीन हो गया कि वह और सब भूल गये उन्होंने

फ़कीर बाबा से सहायता की मांग की और उस मांग की पूर्ति फ़कीर बाबा के रूप में प्रकट हुई और जगजीत सिंह की सहायता की।

इस प्राकृतिक व्याख्या का कथन हम अगले अध्याय में करेंगे। यहाँ तो केवल इतना बता देना पर्याप्त होगा कि जिस प्रकार विभिन्न धर्मों, गुरुओं तथा अवतारों के अनुयायी अपने-अपने इष्ट के रूप का दर्शन करते हैं, उसी प्रकार डा० जगजीत सिंह ने फ़कीर बाबा के रूप का दर्शन इस लिए किया क्योंकि फ़कीर बाबा ही उनके इष्ट थे।

परन्तु जो दूसरा उदाहरण यहां दिया जा रहा है वह डाक्टर जगजीत सिंह के उदाहरण से बिलकुल भिन्न है। यह एक ऐसे प्रकार का उदाहरण है जिस में फ़कीर बाबा का रूप ऐसे लोगों के सामने भी प्रकट होता है जिन्होंने न तो कभी फ़कीर बाबा का नाम सुना है और न ही कभी उनको देखा है। ऐसा एक नहीं, अनेकों उदाहरण हैं परन्तु यहां पर केवल एक ही उदाहरण दिया जा रहा है। यह कहानी एक ऐसे

निर्धन स्कूल मास्टर श्री रामस्वरूप की है जो भारत के एक छोटे से कस्बे के एक छोटे से स्कूल में पढ़ाता था। उसकी आय इतनी कम थी कि उससे उसके परिवार के पालन-पोषण में बड़ी कठिनाई आती थी यह घटना 1969 की है। जिस क़स्बे में रामस्वरूप पढ़ा रहा था वहां डाक्टरों की कमी थी। रामस्वरूप को कुछ बीमारियों का इलाज करना आता था, परन्तु उसके पास डाक्टर की डिग्री या लायसैन्स नहीं था। फिर भी अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए उसने अपनी आय बढ़ाने के विचार से उस कस्बे के बीमार लोगों के इलाज का काम आरम्भ कर दिया। काफ़ी समय तक वह इस प्रकार विना लायसैन्स के काम करता रहा। एक दिन वह मुसीबत में फंस गया। इस घटना को उसने स्वयं फ़क़ीर बाबा को बताया और फ़क़ीर बाबा ने इस घटना को "A word to Americans" नामक पुस्तक में 1971 में प्रकाशित भी किया है। इसी घटना को फ़क़ीर बाबा ने अमेरिका से आई हुई एक जिज्ञासु, अति सुन्दर नवयुवती को जो उनके दर्शन करने के लिए आई हुई थी नई दिल्ली में इस प्रकार सुनाया:—

“प्यारी और किरन बेटी ! सुनो। मैं एक घटना जो दो वर्ष पूर्व घटी थी, उसे तुम्हें सुनाता हूं। रामस्वरूप नाम का एक स्कूल मास्टर एक छोटे से कस्बे के एक छोटे से स्कूल में पढ़ाता था। उस का वेतन इतना कम था कि उससे वह अपने परिवार का गुज़ारा नहीं कर सकता था। उसको कुछ दवाइयों का ज्ञान था इस लिए उसने उस क़स्बे में विना लायसैन्स के बीमारों का इलाज करना शुरू कर दिया। इससे उसकी आमदनी बढ़ने लगी। कुछ समय तक उस का काम ठीकठाक चलता रहा। एक दिन क़स्बे का एक धनवान् व्यक्ति रामस्वरूप के पास अपना इलाज करवाने के लिए आया। रामस्वरूप ने उसको दवाई दी परन्तु उस दवाई से उस धनी व्यक्ति की हालत सुधरने के स्थान पर शीघ्रता से बिगड़ने लगी और एक-आध दिन में ही वह मरने के निकट पहुंचने लगा। जब रामस्वरूप को इसकी सूचना मिली तो वह सन्नाटे में आ गया। उसे मरीज़ की हालत के साथ-साथ इस बात का भी डर लगने लगा कि वह अब पकड़ा जायेगा क्योंकि वह विना लायसैन्स के डाक्टरी कर रहा था। रामस्वरूप इतना डर गया

कि उसको इस मुसीबत से निकलने का कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था। उसके मन में यही विचार आ रहा था कि यदि धनी व्यक्ति मर गया तो उसे जेल में जाना पड़ेगा और सम्भवतया उसे मौत की सज़ा मिलेगी। उसका भगवान् में पक्का विश्वास था। उसने हाथ जोड़ कर बड़ी श्रद्धा से भगवान् से सच्चे दिल से प्रार्थना की कि वह उसे इस मुसीबत से बचायें। भगवान् ने सम्भवतया उसकी प्रार्थना सुन ली। उसी समय कमरे में प्रकाश हुआ और उस प्रकाश में से मेरा रूप निकला। ऐसा मुझे राम-स्वरूप ने स्वयं बताया। मेरे रूप ने रामस्वरूप को कहा, चिन्ता मत करो रामस्वरूप! बाज़ार जा कर इस दवाई को ख़रीद कर लाओ और मरीज़ को दे दो वह ठीक हो जायेगा।"

रामस्वरूप का कहना है कि दवाई का नाम बता कर मेरा रूप अदृश्य हो गया। रामस्वरूप का कहना है कि वह मेरे रूप को देख कर चकित रह गया था परन्तु इससे पहले उसने ऐसे रूप वाले व्यक्ति को कभी भी देखा नहीं था। फिर भी वह बाज़ार गया उस नाम की दवा ख़रीदी और उस मरीज़ को दे दी।

और वह मरीज़ ठीक हो गया । रामस्वरूप जेल में जाने से वच गया, परन्तु [illegible] में नहीं आया कि मुसीबत में सहायता करने वाला रूप किस महान् पुरुष का था। इस घटना के कुछ समय वाद रामस्वरूप एक ऐसे सज्जन से मिले, जिन्होंने उसे मेरे तथा मेरे सत्संग के विषय में बताया और उसे मेरी एक पुस्तक दी जिसमें मेरा चित्र भी छपा हुआ था। रामस्वरूप ने जब उस पुस्तक में छपा हुआ मेरा चित्र देखा तो वह भौचक्का रह गया और चिल्लाया 'हे भगवान ! यह तो उसी महात्मा का चित्र है जिन्होंने प्रकाश से प्रकट हो कर मुझे दवाई का नाम बताया था।'

कुछ ही समय के बाद रामस्वरूप मुझे मिलने के लिए आया और उसने सारी घटना को मुझे शुरू से आखिर तक विस्तार पूर्वक सुनाया।

अध्याय सातवाँ

चमत्कारी घटनाओं से आत्मानुभूति की ओर ।

चमत्कारी घटनाओं को झूठा नहीं कहा जा सकता, परन्तु उनको जीवन का परम लक्ष्य भी नहीं माना जा सकता । इसमें तनिक मात्र भी सन्देह नहीं कि तथाकथित चमत्कारी घटनाओं से आम संसारी लोगों की श्रद्धा, विश्वास तथा आत्म बल को बल मिलता है । नास्तिक तथा संशयवादी व्यक्तियों को ईश्वरानुभूति को ओर ले जाने का एकमात्र मार्ग सम्भवतया चमत्कारी घटनाओं का घटना ही है । अत चमत्कारों का अपना महत्त्व है । चमत्कारी घटनाओं के अनुभव के बाद मनुष्य आत्मानुभूति की ओर सम्भवतया शीघ्र जा सकता है । परम सत्ता को प्राप्त करना तो बिरले ही लोग चाहते हैं । आम लोग तो संसारी भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखते हैं इसलिए

वे साधु, संतों तथा महात्माओं के दर्शन करने जाते हैं कि उनके आशीर्वाद से उनकी इच्छाएँ पूरी हो जायें। सन्त दयालु होते हैं। यद्यपि वे स्वयं परम सत्ता के ज्ञान को प्राप्त कर चुके होते हैं और भौतिक वस्तुओं से उन्हें कोई लगाव नहीं होता, फिर भी वे सांसारिक लोगों की भौतिक इच्छाओं को बुरा नहीं बताते। वे जानते हैं कि सभी लोग उस ऊँचे स्तर पर नहीं पहुंच सकते। लोगों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए सन्त सच्चे दिल से आशीर्वाद देते हैं और लोगों की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। लोग समझते हैं हैं कि चमत्कार घटित हो रहे हैं।

फ़कीर बाबा के पास भी सैकड़ों व्यक्ति रोज़ कोई न कोई सांसारिक इच्छा ले कर उनसे आशीर्वाद लेने आते हैं। फ़कीर बाबा स्वयं तो मन के स्तर से बहुत ऊपर उठ चुके हैं, वह निज धाम को पहचान चुके हैं, परन्तु परम दयालु होने के कारण वे लोगों को उनकी इच्छापूर्ति के लिए आशीर्वाद देते हैं। उन का विश्वास बढ़ाने के लिए उन्हें प्रसाद भी देते हैं। कई बार तो उनके आशीर्वाद से असम्भव काम भी

सम्भव हो जाते हैं और उनमें दृढ़ विश्वास रखने वाले अनुयायी उनके रूप से अजीब-अजीब काम लेते हैं। ये घटनाएँ ऐसी होती हैं कि उनकी कोई प्राकृतिक व्याख्या देना सम्भव नहीं। कोई भी तर्कशील व्यक्ति या वैज्ञानिक ऐसी घटनाओं के घटने को सत्य नहीं मानेगा परन्तु फिर भी ऐसी घटनाएं घटित हो रही हैं। यहाँ पर एक ऐसी महिला का उदाहरण देना उचित होगा, जिसके साथ ऐसी चमत्कारी घटना घटित हुई।

एक अधेड़ महिला ने अपनी बेटी के विवाह पर सैकड़ों लोगों को भोजन के लिए बुलाया। भोजन खाने के बाद सब लोग अपने-2 घर वापिस चले गये। नौकर-चाकर भी थके हुए होने के कारण अपने घरों को चले गये। रात के बारह बज चुके थे। रसोई घर में जा कर जब उस महिला ने ढेर सारे जूठे बर्तनों को देखा तो वह घबड़ा गई। रसोई घर में फ़कीर बाबा की एक बड़ी तस्वीर टंग रही थी। उसी महिला ने तस्वीर के आगे हाथ जोड़ कर प्रार्थना क कि फ़कीर बाबा उसे उन बर्तनों को साफ करने

के लिए कोई सहायता भेजें। अचानक रसोई घर में प्रकाश हुआ और उसमें से फ़कीर बाबा प्रकट हुए। उन्होंने उस महिला के बड़े-2 बर्तन उठाये तथा उनको साफ़ करने में सहायता दी और उसके बाद वह अदृश्य हो गये। ऐसी घटना की आप क्या व्याख्या देंगे ?

फ़कीर बाबा ने अपने जीवन में सैकड़ों निःसन्तान स्त्रियों को पुत्र होने का आशीर्वाद दिया, जिससे उनके सन्तान हो गई। कई स्त्रियों में जो फ़कीर बाबा के पास होशियारपुर नहीं जा सकी, उन्होंने उनकी फोटो के आगे खड़े हो कर उनसे सन्तान प्राप्त करने की प्रार्थना की। फ़कीर बाबा के आशीर्वाद से उन्हें भी पुत्र उत्पन्न हुए। कुछ ऐसी महिलाएं भी थी जिनकी आयु पचास वर्ष से ऊपर थी और जिनको मासिक धर्म भी नहीं होता था, उन्हें भी पुत्र हुए। एक ऐसी घटना के विषय में फ़कीर बाबा ने 1969 में अमेरिका से आये हुए ए०आर०ई० के शिष्ट मण्डल को बताया। उस ग्रुप के एक विद्वान् व्यक्ति ने फकीर बाबा से प्रश्न किया, "हम यह मानते हैं

कि मानसिक शक्तियों तथा सिद्धियों का सम्बन्ध व्यक्ति की आन्तरिक आध्यात्मिकता के विकास से होता है। परन्तु कभी 2 देखने में आता है कि कुछ लोगों के पास ऐसा शक्तियाँ या सिद्धियां होती हैं, जो आध्यात्मिकता से कोसों दूर हैं। ऐसा क्यों होता है ?"

फ़कीर बाबा ने उत्तर दिया, "मैं सिद्धियों के अस्तित्व में विश्वास रखता हूं। किन्तु यह मानसिक शक्ति केवल उन लागों पर प्रभाव डाल सकती है, जो इसके पात्र होते हैं। मैं आपको इस सन्दर्भ में एक उदाहरण देना चाहता हूं। इन्दौर में मेरे एक अनुयायी सेठ मोतीलाल की आयु 55 वर्ष की थी और उसकी पत्नी की 50 वर्ष की। जिस समय वह मेरे पास पुत्र प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेने आये डाक्टरों ने उन्हें बता रखा था कि किसी शारीरिक ख़राबी के कारण सेठ मोतीलाल की पत्नी कभी सन्तान पैदा नहीं कर सकती। पति, पत्नी मेरे पास आए। पत्नी फूट-2 कर रोने लगी बोली कि उनकी इतनी सम्पत्ति, इतना धन, इतना व्यापार बेटे के बगैर व्यर्थ है। उन्हे पुत्र चाहिए। उन्होंने मुझे प्रसाद

और आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। मुझे सेठ मोती-लाल की पत्नी पर बहुत दया आई। उस समय मेरे निकट एक आम पड़ा था। मैंने उस आम को उसे देते हुए कहा, बेटी इसे खा लो मालिक की कृपा से शीघ्र ही तुम्हें पुत्र होगा।'

वह महिला आम ले कर उस डाक्टर के पास गई जिसने उसे सन्तान पैदा करने के अयोग्य बताया था और बोली, "डाक्टर बाबू! तुम कहते हो कि मेरे सन्तान नहीं हो सकती। परन्तु यह देखो यह आम है जो बाबा ने मुझे प्रसाद के रूप में दिया है। मैं इसे खा रही हूं। अब मैं शीघ्र ही गर्भवती हो जाऊंगी और लड़के को जन्म दूंगी, इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। फ़कीर बाबा ने ऐसा ही कहा है।' वास्तव में ही उसे एक वर्ष के बाद लड़का पैदा हो गया और मैंने उसका नाम भी श्री भगवान् रखा। परन्तु मेरी यह बात सुनो। मेरी अपनी लड़की का विवाह किये हुए बीस वर्ष से भी अधिक हो गये हैं और उसके कोई सन्तान नहीं हुई। मैंने एक

बार नहीं अनेक बार उसे भी इसी भावना से प्रसाद दिया जैसे कि मैंने सेठ मोतीलाल की पत्नी को दिया था। परन्तु मेरी लड़की के कोई सन्तान नहीं हुई। बात असल में यह है कि मन की शक्ति की सफलता का मूल कारण है मनुष्य का अपना ही विश्वास। मेरी लड़की का अपना विश्वास सेठ मोतीलाल की पत्नी की भांति दृढ़ नहीं रहा होगा। इसमें [illegible] भी सन्देह नहीं कि मनुष्य की इच्छा-शक्ति जरूर काम करती है, परन्तु वह पूर्णतया सफल उस समय होती है, जब विश्वास दृढ़ होता है। जहां पर विश्वास डगमगा जाता है, वहां पर सन्त भी सहायता नहीं कर सकते।

फकीर बाबा ने उपरोक्त घटना की व्याख्या 1969 में की थी। उस समय तक उन्हें अनेक ऐसे अनुभव हो चुके थे, जिनसे उनका यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि विश्वास में शक्ति होती है और चमत्कार तो केवल आध्यात्मिक उन्नति का प्रभाव-मात्र होते हैं। इसलिए चमत्कारों को ही सब कुछ 2
समझ कर वहीं नहीं रुक जाना चाहिए। जो लोग